[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3608

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कला एवं व्यवसाय एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (आर्थिक परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. रजनी भारती
शोध छात्रा – गीता मोरे
शा. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

प्रस्तावना :– भारत में कला एवं व्यवसाय का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। जिसका गौरव कभी दर पीढ़ी चलते हुए अपना अस्तित्व बरकरार रखे हुए है। शिल्पकारों एवं कारीगरों की पहचान व्यक्तिगत नहीं अपितु शिल्पगत तथा कलात्मक रूप में होती है। देश में कला एवं शिल्प के विविध स्वरूप हैं। आजकल कला विषयों में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य इत्यादि मुख्य कलायें प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त शिलप के विषय में जैसे – लकड़ी का काम, चमड़े का काम, कताई–बुनाई, बागवानी, मिट्टी के बर्तन बनाने का काम, कालीन बनाना, चटाई बनाना, खिलौने बनाना, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, लोहे का काम, टीन का काम इत्यादि। व्यवसाय की दृष्टि से आज कला का सबसे सरल उपयोग है। आज की विषम आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति में भी मनुष्य कला कार्य के द्वारा जीविकोपार्जन कर सकता है। यही नहीं बल्कि कहला एवं शिलप गाँवों में अधिकांश जनसंख्या को रोजगार मुहैया कराने का भी जरिया है। व्यवसाय की दृष्टि से आज कला का सबसे सरल उपयोग है। आज की विषम आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति में भी मनुष्य कला कार्य के द्वारा जीविकोपार्जन कर सकता है। यही नहीं बल्कि कला एवं शिल्प गाँवों में अधिकांश जनसंख्या को रोजगार मुहैया कराने का भी जरिया है।

संबंधित साहित्य समीक्षा :–

(1) गाँधी हेमा (2009) – ''हस्तशिल्प कला से रोजगार'' हेमा गाँधी ने हस्तशिलप कला से मिलने वाले रोजगार पर अध्ययन किया और उन्होंने अपने अध्ययन में पाया है कि आज भी देश में अधिकांश जनता को घर बैठे रोजगार मिल रहा है तथा ग्रामीण इलाकों में भी लोगों द्वारा कई प्रकार के आकर्षण वस्तुओं को तैयार कर बाजार में बेची जाती है और अधिकांश लोगों की रोजी–रोटी इसी उद्योगों से मिल रही है।

(2) डॉ. मिश्र (2003) – ''ग्रामीण कुटीर उद्योगों पर तकनीकी प्रभाव'' के अंतर्गत डॉ. मिश्र ने शोध अध्ययन कर यह निष्कर्ष दिया है कि इस बदलती हुई परिस्थितियों में तैयार वस्त्र निर्माण उद्योग बहुत ही प्रतिस्पर्धा और कठिनाई के दौर में विद्युत से चलाने वाले करघों के द्वारा वस्त्र निर्माण की गुणवत्ता में सुधार कम हुआ है। अन्य बड़े उद्योग की तुलना में उनकी दक्षता कम होने से कुटीर उद्योगों की स्थिति खराब होती जा रही है।

(3) राठौर भारती (1999) – ''ग्रामीण हस्तशिल्प उद्योगों की उत्पादकता एवं विपणन का अध्ययन'' के अन्तर्गत यह निष्कर्ष निकाला है कि हस्तशिल्प उद्योगों में उत्पादन में कमी हुई है, इसका मुख्य कारण फैशन, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता तथा गुणवत्ता में परिवर्तन के कारण इन उद्योगों पर प्रभाव पड़ा है। जिससे रोजगार प्रभावित हुआ है। अतः हस्तशिल्प उद्योगों को प्रतियोगिता में बने रहने के लिए उच्च तकनीकी तथा सरकार द्वारा स्थानीय कारीगरों को समय–समय पर फेशन के मांग के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य :– इस शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार है –
कला एवं शिल्प व्यवसाय में कार्यरत जनसंख्या की रोजगार प्रकृति का अध्ययन करना।
कला एवं शिल्प व्यवसाय में कार्यरत जनसंख्या की आय एवं व्यय संरचना का मूल्यांकन करना।
कला एवं शिल्प व्यवसाय में आने वाली प्रमुख समस्याओं का पता लगाना तथा उन्हें दूर करने के लिए उचित सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की विधि :– प्रस्तुत शोध में द्वितीयक समंकों के आधार पर अध्ययन किया गया है। द्वितीयक समंक वे समंक होते हैं, जिनका संकलन पहले से किसी अन्य अनुसंधानकर्ता या संस्था द्वारा किया जा चुका होता है, जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। समंकों के प्राप्ति स्त्रोत – इंटरनेट, वार्षिक पत्रिका, आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट, केन्द्रीय पुस्तकालय आदि।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

आँकड़ों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण

तालिका क्र. – 1

कला उद्योगों की संख्या तथा औसत दैनिक नियोजन

वर्ष	पंजीकृत कला उद्योगों की सं.	वास्तविक रोजगार संख्या	अधिकतम रोजगार संख्या
2006	10	279	399
2007	2	40	40
2008	2	42	48
2009	2	42	48
2010	2	42	48

स्त्रोत :– संचालक आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल :–
उपर्युक्त तालिका में श्रम तथा रोजगार से संबंधित समंको का विवरण दिया गया है जिसमें 2006–2010 तक पंजीकृत कला उद्योगों की संख्या के साथ–साथ उसमें कार्यरत श्रमिकों की वास्तविक रोजगार की स्थिति को दर्शाया गया है तथा सबसे अधिक वर्ष 2009 में अधिकतम रोजगार की संख्या 399 है और अन्य वर्षों में वास्तविक एवं अधिकतम रोजगार की संख्या बराबर है।

तालिका क्र. 2

कला व्यवसाय की संख्या एवं नियोजन

वर्ष	लकड़ी का काम		मिट्टी के बर्तन बनाने का काम	
	व्यवसाय की संख्या	श्रमिकों की संख्या	व्यवसाय की संख्या	श्रमिकों की संख्या
2008.2009	26	1250	60	615
2009.2010	51	2100	58	594
2010.2011	45	1950	60	630
2011.2012	40	1650	62	652
2012.2013	34	1580	58	590

स्त्रोत :– संचालक आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल
उपर्युक्त तालिका में कला एवं शिल्प व्यवसाय के अन्तर्गत लकड़ी का काम एवं मिट्टी के बर्तन बनाने के काम से संबंधित समंकों का विवरण दिया गया है जिसमें वर्ष 2009–2013 तक के समंक दिये गये हैं और इन व्यवसायों की संख्या तथा श्रमिकों की संख्या का विवरण दिया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इन व्यवसायों की संख्या तथा श्रमिकों की संख्या का विवरण दिया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि इन व्यवसायों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

निष्कर्ष :–
भारतीय अर्थव्यवस्था में कला एवं शिल्प व्यवसाय की महत्वपूर्ण भूमिका है ये उद्योग श्रम प्रधान है। इनमें पूँजी की कम आवश्यकता होती है और श्रमिक अधिक संख्या में रोजगार पा सकते हैं। अतः भारत के ग्रामीण क्षेत्रों का तीव्रगति से औद्योगिक विकास करने तथा कृषि पर से जनसंख्या का भार कम करके कला व्यवसाय में लगाने के लिए महत्वपूर्ण व आवश्यक है कि जो कम पूँजी व संसाधनों से प्रारंभ हो सके तथा जिससे अधिकतम व्यक्तियों को रोजगार प्रदान कर सकें। इस प्रकार कला एवं शिल्प व्यवसाय आर्थिक सामाजिक पहलुओं से देश के औद्योगिक विकास की आधारशिला है।

समस्याएँ :–

- कला व्यवसाय को संचालित करने में कच्चे माल की समस्या का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उन्हें निम्न किस्म का कच्चा माल मिलता है।
- इन व्यवसायों में पुराने तरीके से काम होता है और उनके औजार भी पुराने होते हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

- इन व्यवसायों में सामना करना पड़ता है क्योंकि उनको उचित मात्रा में ऋण भी उपलब्ध नहीं होता है।
- इन कारीगरों एवं शिल्पकारों को अपने माल की बिक्री से उचित मूल्य नहीं मिलता है। अतः उनको विपणन की समस्या से जुझना पड़ता है।
- इन व्यवसायों को बिजली भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलती है।

सुझाव :–

- इन व्यवसायों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बिक्री के लिए एक केन्द्रीय विक्रय संस्था की स्थापना की जानी चाहिए।
- इन व्यवसायों को वित्तीय सुविधाएँ देने वाली संस्थाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।
- इन व्यवसायों को पर्याप्त मात्रा में बिजली की आपूर्ति की जाना चाहिए।
- इन व्यवसायों में कार्यरत कारीगरों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. *मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (2005), सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवके प्रकाशन, नई दिल्ली*
2. *कुरूक्षेत्र, जुलाई 2009, निर्माण भवन, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।*
3. *योजना, मई 2011, 538 योजना भवन, संसद मार्ग नई दिल्ली।*
4. *''हस्तशिल्प कला से रोजगार'' (2009), ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।*